International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232
Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 3; Issue 5; September 2017; Page No. 39-40

विविश रमेश के नाट्य अग्नि खण्ड–खण्ड में मिथक पात्रों एवं सामाजिक यथार्थ का सम्बन्ध

रूपाली सारये
एम. फिल्. (हिन्दी) नेट, स्लेट, विक्रम विश्वविद्यालय, मिशन कम्पाउण्ड, देवासरोड, उज्जैन, मध्य प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

मानवीय सभ्यता का पूरा इतिहास मिथकों में संग्रहित है। ज्ञान–विज्ञान की विभिन्न शाखाओं के अंतर्गत विवेचना करके अनेक विद्वानों ने मिथक के बारे में बताया। प्रत्येक युग का मिथक अपने युग का वास्तविक परिचय प्रस्तुत करता है। मानवीय सभ्यता के विकास के प्रत्येक क्षण यात्रा करने के साथ उस युगीन यथार्थ को आत्मसात करने में मिथक सफल सिद्ध हुआ है। आधुनिक युग तक इसकी अभिव्यक्ति क्षमता बनी हुई है। मिथक की चर्चा तो पौराणिक कथाओं एवं अलौकिक कथाओं में भी होती रही हैं। लेकिन आज के युग में मिथक सामाजिक एवं मानवीय यथार्थ के साथ घुल–मिल है तथा यह भी कहा जा सकता है कि पौराणिक मिथकों की नयी ढ़ंग से व्याख्या की जा रही है। नये–नये मिथकों को गढ़ा जा रहा है। मिथकों से हमारे जीवन के सच विचार और भावनाओं के गहरे सम्बन्ध है। मानवीय भावनाओं की सौंदर्यात्मक अभिव्यक्ति करने के कारण मिथकों के प्रति लोगों की आस्था अधिक रहती है। लोगों के भावनात्मक संबंध मिथक के साथ सदैव है।

मिथक में वर्णित अलौकिक कथा एवं घटनाओं को केवल कल्पना के अंतर्गत व्याख्या करना इसके अस्तित्व को गौंण बना देता है। कथात्मकता, धार्मिकता और अलौकिकता के ढ़ाँचें से अलग यह जातीय जीवन के अनुभवों पर टिका हुआ एक व्यापक एवं लोक स्वीकृत सत्य है। मिथक तो मानव के अन्दर और बाहर की भौतिक शक्तियों को प्रतीकात्मक रूप है। प्रकृति और मानव के मानसिक अवस्थाओं का प्रतिनिधित्व प्रत्येक मिथक करता है। सभी पौराणिक पात्रों एवं घटनाओं में यह सच दृष्टिगोचर होता है। कई प्राकृतिक एवं सामाजिक घटनाओं को मिथकों के आधार पर उद्घाटित किया जाता है। इनकी विषय वस्तु में इतनी शक्ति होती है जिससे समाज के अतीत, वर्तमान और भविष्य प्रकाशमय हो जाते हैं। हम इसकी अभिव्यक्ति बिम्बों, प्रतीकों, भाव, धर्म आदि कई स्वरूपों में होती हैं। इन सभी माध्यमों का मुख्य लक्ष्य सामाजिक यथाथ्र की अभिव्यक्ति है। साहित्य एवं मिथक दोनों ही अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है। इसलिए अभिव्यक्ति की मूलवृत्ति अभिव्यक्ति दोनों में एक समान है। मिथक की भावनाएँ, कल्पना, प्रतीक आदि तत्त्व साहित्य के आधार तत्त्वों से ही आते हैं। अतः मिथक और साहित्य के बीच घनिष्ठता होने से साहित्य में मिथकीय प्रयोग सफल हुआ है।

मिथक शब्द अंग्रेजी के 'Myth' शब्द का हिन्दी शब्द है। 'Myth' शब्द की व्युत्पत्ति ग्रीक भाषा के 'माइथोस' शब्द से हुई है, जिसका अर्थ है 'मुख से उच्चरित वाणी' 'Myth' शब्द का अर्थ काल्पनिकता एवं अविश्वसनीय कथाओं से समझा जाता रहा है। आगे चलकर इस शब्द का प्रयोग देवताओं की कथा के लिए होने लगा। आधुनिक युग आते–आते इसका अर्थ व्यंजनाओं से भरा–पूरा रहता है। 'जब मनुष्य के कुछ कलात्मक शब्द अथवा कथा कहना शुरु किया तब से मिथक द्वारा सामाजिक यथार्थ के नये–नये प्रतीकात्मक या सांकेतिक रूप व्यक्त हो रहे हैं। मिथक का अर्थ उस कथ्य में निहित है, जो मनुष्य व्यक्त करना चाहता है। जिस भाषा में व्यक्त करना चाहता है वह भले ही अवैज्ञानिक अथवा सतह पर झूठी लगे, किन्तु उसका कथ्य सच्चाई से भरा होता है। मिथक को मनुष्य के ऐतिहासिक अस्तित्व का सामाजिक कथ्य मानना चाहिए।'[1] मिथक की दृष्टि शाश्वत होती है तथा इसकी यह एक बड़ी विशेषता है।

हिन्दी में मिथक के लिए 'पुराकथा', 'पुरावृत्त', 'कल्पकथा', 'धर्मकथा', 'पुराणकथा' आदि अनेक शब्द प्रयुक्त हैं। हिन्दी में सर्वप्रथम आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने 'मिथ' के साथ 'क' प्रत्यय जोड़कर 'मिथक' शब्द का प्रयोग किया। द्विवेदी ने मिथक को अलौकिक और लौकिक तत्त्वों से मिश्रित अर्थ प्रदान किया है। संस्कृत में मिथक शब्द के लिए दो शब्द प्रयुक्त होते हैं 'मिथस' अथवा 'मिथः' जिसका तात्पर्य होगा 'परस्पर' अथवा 'मिथ्या' जो असत्य का वाचक है।

भारत में मिथक सम्बन्धी अवधारणा मूलतः वेदों और उपनिषदों के आधार पर है क्योंकि सम्पूर्ण साहित्य मिथकों से भरा पड़ा है। भारतीय संस्कृति का सूक्ष्म रूप वैदिक साहित्य में देखा जा सकता है। प्राकृतिक घटनाओं में दिव्य शक्ति का आरोप करते हुए इन्द्र, वरूण, सूर्य, विष्णु आदि मिथकों का वर्णन वैदिक साहित्य में उपलब्ध होता है। "वैदिक साहित्य में मिथक के जो सूत्र उपलब्ध होते है वे वैदिक ऋचाओं की कालान्तर में हुई व्याख्याओं के रूप में पर्याप्त विकसित हुए और सूक्त, संवाद, गाथा देवकथा, आख्यान आदि को पार करते हुए पुराण वाङमय में अपनी सम्पूर्ण मिथकीय शक्ति के साथ उपलब्ध होते है।[2]

भारतीय विद्वानों ने मिथक के मूल बिम्ब पर अधिक बल दिया और इसमें प्राकृतिक एवं जीवन के यथार्थ को ढूँढ़ने की राय दी। मिथकीय चिन्तन के क्षेत्र में भारतीय उपलब्धि पाश्चात्य चिन्तन धाराओं से भी प्रेरित है। भारतीय वाङ्मय मिथकों से भरा हुआ है। वेदों से लेकर संस्कृत के काव्य, नाटक तथा आख्यायिका आदि में पालि, प्राकृत और अपभ्रंश के साहित्य में भी मिथक है। भारत की पुराण, पुराख्यान, देवकथा में मिथकों का भण्डार है। आदिकाल, मध्यकाल और वर्तमानकाल में मिथकों की शक्ति समृद्ध है। वर्तमान में प्रो. विविक रमेश की रचना 'खंड–खंड अग्नि' काव्य नाटक में मिथकों के द्वारा भौतिक एवं आंतरिरक चेतना को भी दीप्त कराने के लिए सौन्दर्यमयी चेतना के दर्शन होते है।

प्रो. रमेश ने जब अपने अर्न्तमन की वाणी को प्रकट करने के लिए कोई सहज आधार न मिला तो उन्होंने मिथकों के आधार से अपनी अर्न्तव्यथा कही। इन सभी मिथक पात्रों ने इस काव्य नाटक को जीवन्ता भी प्रदान की है। कहा भी गया है कि – "जिन तत्त्वों से मानव अपना मानसिक और शारीरिक परिष्कार करता है और परिष्कार के उपरान्त भी अपनी उज्ज्वल वृत्तियों से समायोजन तथा राष्ट्रोत्थान करता है, वह संस्कृति है।"[3]

संस्कृतियाँ हमेशा मानव की पूरी जीवन पद्धति से जुड़ी हुई हैं और

एक राज्य की बनावट के पीछे उसकी संस्कृति की ही अधिक प्रधानता है। प्रस्तुत काव्य नाटक में अनेक प्रकार की विचारधाराएँ रही हैं, सम्प्रदाय रहे हैं, धर्म रहे हैं, दर्शन रहे हैं लेकिन अपनी सभी असमानताओं के बाद भी इस नाटक में मानव धर्म को सबसे अधिक महत्व दिया गया है। जब राम लंका पर विजय प्राप्त कर लेते है और स्वयं सीता को लेने न जाकर मात्र हनुमान एवं विभीषण से संदेश पहुँचाते है। तब सीता का मन कितना उदास हुआ होगा। राम के द्वारा जब सीता को मर्यादा तोलने का भान कराया जाता है तब हनुमान और बाकी सभी सकारात्मक मानवीय मूल्यों का प्रतिनिधित्व करते हैं। राम के उन विरोधी तीक्ष्ण बोलो के विरुद्ध लड़ते है, तर्क–वितर्क करते है। ऐसे में प्रो. विविश के मिथक पात्र ऐसी बातें कह जाते है जो आम व्यक्ति अथवा कोई रामभक्त नहीं कहेगा। अपने इन मिथक पात्रों से कभी प्रो. विविश प्रश्न करते है तो कभी इन्हीं प्रश्नों का उत्तर देते है। जब उद्घोषणा राम के विजय को प्रसन्नचित होते हुए गुनगुनाती है तब सन्नाटा नहीं सज जान समझकर भी कोने में खड़ा है और व्यंग्य से भर कर पूछता है–

जहाँ तक सुना जा सकता है
हर्षोल्लास राम के शिविर का पर सीता ?
क्या सचमुच चुप है सीता भी ?
मगर क्यों घोलूं मैं
चुप रहना है मेरा स्वभाव।

यहाँ पर सन्नाटा पात्र रूप से अपने विचार समाज के प्रति रखकर कह रहा है कि विजय राग में क्यूं स्वयं सीता चुप है। इसमें कोई कारण तो अवश्य है, क्योंकि राम की विजय सिर्फ विजय नहीं अपितु सीता और राम के परस्पर मिलन की घड़ी है। पर जब सब कुछ अनुकूल है जब, तब भी सीता के पास राम नहीं है। ऐसे में सन्नाटा ईशारा करता है कि सब ठीक होकर भी ठीक नहीं। वहीं जब अग्नि परीक्षा की बात होती है तो स्वयं अग्नि भी सीता की परीक्षा पर स्वयं पर लज्जित होता है, वह कहना चाहता है कि जब रावण के स्पर्श से सीता माँ अपवित्र हो सकती हैं तो मेरे स्पर्श से वे कैसे शुद्ध अथवा पवित्र कही जाएगी। यद्यपि हा सब बातों से अनजान सिर्फ विजय का उल्लास मनाता है, जिसे सुनकर सन्नाटा स्वयं को कोसता है।

यह प्रतीक स्पष्ट करते है उस घटनाक्रम के प्रतिरूप को जो जब घटित हुआ तब किस तरह का वातावरण था। कई दर्शक बस मूक होकर देख रहे थे कि क्या हो रहा है और कोई प्रश्नों के उत्तर देने के लिए नहीं था। वह बस चल रहा था सब यंत्रवत् जैसे कि अब शब्द ही समाप्त हो गए। कोई कहता भी तो क्या क्योंकि आस्था के लोग ये प्रश्न तो उठाते है कि तुम प्रश्न नहीं कर सकते देवत्त पर।

आखिर में जब घड़ी आती है अग्नि परीक्षा के उपरान्त की तब अंदर ही अंदर सब मर चुका होता है। तब आती है झूठी स्वीकारोक्ति की बारी पर ये स्वीकारोक्ति नहीं है राम की, ये तो है सीता की मौन स्वीकारोक्ति जो अब और परीक्षा में अग्नि को नहीं ग्रहण कर सकती अब तो धरती ही माँ का आँचल है जो समेट लेगी उसका हर हिस्सा और धरती भी कहती है सीता से

साक्षी रहे युग – खण्ड
अब हुआ यदि कोई और अपमान,
बंद हुई बाँहें राम की
तो यह पृथ्वी देगी गोद स्वाभिमान की।

इस तरह हर मिथक पात्र अपनी उपस्थिति दृश्य करवाता है। धरती हर बोझ सह लेती है सब कुछ अपने अर्न्त में समाहित कर लेती है। फिर एक स्त्री का दर्द जो स्वयं उसकी पुत्री है वह कैसे सौंप दे किसी ओर को। वह जानती कि अब वह और नहीं खण्डित होने दे सकती है अपनी ममता को इसलिए कहती मौन शब्दों में सीता को अब कहीं परीक्षा देने की आवश्यकता नहीं जब भी हो जरूरत तो मैं सब जगह हूँ एक आवाज पर ही आ जाऊँगी तुम्हें अपनाने, ले जाऊँगी दूर सभी कष्टों से।

इस तरह प्रस्तुत नाटक में बहुत कुछ है कहने को परन्तु जितना मैं समझ पाई हूँ, उतना मैंने प्रयास किया है।

प्रो. दिविश ने जो मिथक पात्रों के आधार पर बातें कहीं है वह समाज में कहीं स्वीकार्य है तो कहीं अस्वीकार्य परन्तु यह मिथक अपने प्रश्नों के निवारण भी साथ प्रस्तुत करते है जो किसी मुख्य पात्र के साथ संभव नहीं। इसी कारण इस रचना की विशेषता बढ़ गयी है। इस मिथक पात्रों की उपस्थिति इनकी रचना में जीवटता से प्रस्तुत हुई है। आगे अन्य शोधों द्वारा भी ओर भी संभावनाएँ है इस लेख को बढ़ाने में। अपनी रचना के द्वारा कई शाखाओं में जो संदेश प्रो. दिविश देना चाहते थे, वे उस उद्देश्य में सफल होते नजर आते है।

संदर्भ सूची

1. शंभुनाथ सिंह – मिथक और आधुनिक कविता, पृ. 14.
2. नीलम राठी – साठोत्तर हिन्दी नाटक, पृ. 3.
3. डॉ. रामसजन पाण्डेय – संस्कृति का स्वरूप, पृ. 1.